• दिशा...

मकान के लिए भूमि चयन...

मकान के लिए भूमि का चयन करना सबसे ज्यादा महत्व रखता है। शुरुआत तो वहीं से होती है। भूमि कैसी है और कहां है यह देखना जरूरी है। भूमि भी वास्तु अनुसार है तो आपके मकान का वास्तु और भी अच्छे फल देने लगेगा। उत्तर से दक्षिण की ओर ऊर्जा का खिंचाव होता है।

शाम ढलते ही पक्षी उत्तर से दक्षिण की ओर जाते हुए दिखाई देते हैं। अतः पूर्व, उत्तर एवं ईशान की और जमीन का ढाल होना चाहिए।

आपका मकान मंदिर के पास है तो अति उत्तम। थोड़ा दूर है तो मध्यम और जहां से मंदिर नहीं दिखाई देता वह

निम्नतम है। मकान उस शहर में हो जहां 1 नदी, 5 तालाब, 21 बावड़ी और 2 पहाड़ हो। मकान पहाड़ के उत्तर की ओर बनाएं। मकान शहर के पूर्व, पश्चिम या उत्तर दिशा में बनाएं।

मकान के सामने तीन रास्ते न हों। अर्थात तीन रास्तों पर मकान न बनाए। मकान के एकदम सामने खंभा या वृक्ष न हो। मकान अपनों के ही पास बनाएं। मकान ऐसी जगह हो जहां आसपास सज्जन या स्वजातीय के लोग रहते हों। घर के आगे और घर के पीछे छोटा ही सही, पर आंगन होना चाहिए। आंगन में तुलसी, अनार, जामफल, कड़ी पत्ते का पौधा, नीम, आंवला आदि के अलावा सकारात्मक ऊर्जा पैदा करने वाले फूलदार पौधे लगाएं।

• ऊर्जा...

वास्तुदोष से मुक्ति कैसे पाएं

वास्तुदोष से युक्त आवासीय या व्यावसायिक भवन में पारद शिवलिंग की स्थापना कर उसकी नित्य श्रद्धापूर्वक पूजा -अर्चना करने से दोषों का निवारण हो जाता है। घर में तांबे का पिरामिड रखने और नौ दिनों तक अखंड भगवत कीर्तन कराने से वास्तुदोष के प्रभाव में कमी आती है। घर के मुख्य द्वार पर सिंदूर से स्वस्तिक का नौ अंगुल लंबा तथा नौ अंगुल चौड़ा बनाने से वास्तुदोष के प्रभाव में कमी आती है। चांदी का एक तार घर के मुख्य फाटक के नीचे दबाने और पंचमुखी हनुमान जी का फोटो लगाने से दोष दूर होता है। फोटो का मुंह फाटक की ओर हो। पिरामिड के आकार का मंगल यंत्र घर में लगाने से वास्तु दोषों का नाश होता है। घर के मुख्य द्वार पर तुलसी एवं केले का वृक्ष लगाने से वास्तु दोष दूर हो जाते हैं। अशोक, आम, पीपल और कनेर के पत्ते बहुत ही शुभ माने गए हैं। इनके पत्तों को एक धागे में बांधकर उसका तोरण बनाकर मकान के मुख्य द्वार पर लटका देने से वास्तु दोष दूर होते हैं। घर में गुग्गल या कपूर सप्ताह में कम से कम एक बार अवश्य जलाएं। इसका धुआं वास्तु दोष दूर करता है। हल्दी की गांठ व दाल चीनी की छाल जिस किसी भी घर में रहती है वहां लक्ष्मी की कृपा अवश्य रहती है। घर एवं ऑफिस में मछली रखने से धन व भाग्य में वृद्धि होती है। विशेष लाभ के लिए पश्चिमी दीवार के सहारे पश्चिम की ओर पैर करके सोना चाहिए। ईशान कोण में सीढ़ियां कभी नहीं बनानी चाहिए। ईशान कोण में सीढ़ियां बनी हों तो नैत्य कोण में एक बड़ा कमरा अवश्य होना चाहिए। रसोई घर का दरवाजा अन्य दरवाजों से छोटा रखना चाहिए। भोजन बनाते समय गृहिणी का मुंह पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए। यदि भोजन नौकर बनाता हो तो उसका मुंह उत्तर दिशा की तरफ हो सकता है। भवन के ईशान कोण में एक छोटा सा मंदिर अवश्य होना चाहिए। नित्य आरती करनी चाहिए और घंटी बजानी चाहिए। घंटी की ध्वनि से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है तथा सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होती है। पानी का हौद अथवा कुआं ईशान कोण में शुभ तथा अन्य दिशाओं में अशुभ होता है। गलत स्थान पर बने हौद अथवा कुंड का दोष दूर करने के लिए ईशान कोण में उस हौद से गहरा एवं बड़ा हौद खुदवा लेना चाहिए। द्वार दोष और वेध दोष दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्री झाग और तांबे या सोने की तुश को लाल कपड़े में बांधकर मौली से दरवाजे पर लटकाना चाहिए। शयनकक्ष में कभी भी जूठे बर्तन नहीं रखने चाहिए। अन्यथा घर की गृहिणी का स्वास्थ्य खराब रहने की संभावना रहती है। इसके अतिरिक्त परिवार में क्लेश और धन का अभाव पैदा हो जाता है।

किस दिशा में हो रसोई....

वास्तु शास्त्र का मूल आधार भूमि, जल, वायु एवं प्रकाश है, जो जीवन के लिए अति आवश्यक है. इनमें असंतुलन होने से नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

इसी तरह वास्तु के नियमों का पालन न करने पर व्यक्ति विशेष का स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि उसके रिश्ते पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है...

वास्तु भारत का प्राचीन निर्माण ग्रंथ है। इसके अंदर भवन, इमारत इत्यादि बनाने के नियम और दिशाएं निहित किए गए हैं। वास्तु के अंदर आकाश और पाताल को मिला कर कुल दस दिशाएं होती हैं। चार प्रमुख दिशाएं - उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम, चार विदिशाएं - ईशान, आग्नेय, नैऋत्य और वायव्य होती हैं। दिशा के मध्य भाग को विदिशा कहते हैं। इन सभी दिशाओं का वास्तु के अंदर अपना-अपना अलग महत्त्व है। वास्तु शास्त्र का मूल आधार भूमि, जल, वायु एवं प्रकाश है, जो जीवन के लिए अति आवश्यक है. इनमें असंतुलन होने से नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसी तरह वास्तु के नियमों का पालन न करने पर व्यक्ति विशेष का स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि उसके रिश्ते पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए घर में रसोई आग्नेय(दक्षिण-पूर्व कोण) दिशा में होना चाहिए। आग्नेय कोण का स्वामी अग्नि होता है। स्वामी अग्नि होने के कारण रसोई का इस दिशा में बनाना अत्यंत शुभ माना जाता हैं।

● अगर आग्नेय कोण में जगह नहीं हो तो आप वायव्य (उत्तर-पश्चिम) दिशा में भी आप रसोई को बना सकते हैं। मगर वास्तु शास्त्र के अंदर आग्नेय कोण में बनी रसोई को ही श्रेष्ठ माना जाता है। अब मैं आपको नीचे रसोई में किस जगह क्या-क्या होना चाहिए वो लिखने का प्रयास कर रहा हूं। क्योंकि वो सामान अपनी जगह पर नहीं होंगे तो उसे वास्तु दोष मान जाएगा जिसका दुष्प्रभाव गृहिणी पर पड़ता है।

● चूल्हे को आग्नेय कोण में रखना चाहिए। चूल्हे को दीवार से सटा कर नहीं रखना चाहिए। चूल्हे को उत्तर दिशा में कभी भी नहीं रखना चाहिए, क्योंकि उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर होता हैं। कुबेर की अग्नि से कभी भी नहीं बनती है, इसलिए चूल्हे को वास्तु शास्त्र के अनुसार आग्नेय कोण में ही रखना चाहिए।

● सिंक रसोई घर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, क्योंकि पानी के बिना खाना नहीं बन सकता है और जूठे बर्तन नहीं धो सकते हैं। सिंक को ईशान(उत्तर-पूर्व) कोण में होना चाहिए।

● रसोईघर में बिजली से चलने वाले उपकरण फ्रीज, माइक्रोवेव ओवेन, टोस्टर आदि पश्चिम दिशा में होने चाहिए।

● रसोईघर में प्रयोग होने वाले खाद्य पदार्थ जैसे आटा, चावल, दाल आदि पश्चिम दिशा या दक्षिण दिशा में रखना चाहिए। जिससे वस्तुओं में कभी भी कमी नहीं आती है, बरकत ही बरकत होती हैं।

रसोईघर में उत्तर या पूर्व दिशा में खिड़की होनी चाहिए। जिससे रसोईघर में बनने वाले व्यंजन की गंध ज्यादा न फैले।

● एग्जॉस्ट फैन को रसोईघर की पूर्वी दीवार पर लगाना श्रेष्ठ रहता हैं। यानि आप जिस तरफ खिड़की बना रहे है ठीक उसके ऊपर एग्जॉस्ट फैन लगा ले तो सोने पर सुहागा।

● रसोईघर में पत्थर का स्लैब पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए जिससे गृहिणी का मुख उत्तर या दक्षिण दिशा में रहता हैं।

● वास्तु अनुसार रसोई का दरवाजा ईशान कोण में होना श्रेष्ठकर माना गया हैं।

• सिद्धांत...

कैसा फ्लैट खरीदे...

वास्तुकला का एक प्राचीन भारतीय विज्ञान है जिसमें फ्लैट, अपार्टमेंट और घर के निर्माण के लिए नियम, दिशानिर्देश और सिद्धांत बताये गए है। गलत वास्तु का परिवार की समृद्धि और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। मंगलवार और शनिवार के दिन कभी भी फ्लैट बुक न करें और इस दिन फ्लैट में प्रवेश न करें। कभी भी उत्तर–पूर्व या दक्षिण पश्चिम कोनों वाले फ्लैट न खरीदें। आप जो फ्लैट खरीद रहे है उसकी बालकनी की ढलान उत्तर या पूर्व दिशा की ओर होनी चाहिए। दक्षिण दिशा में स्थित बालकनी वाले फ्लैट नहीं खरीदने चाहिए। बिना कोनें, गोलाकार, घुमावदार और अनियमित आकार के फ्लैट भी नहीं खरीदे जाने चाहिए। इस तरह के फ्लैट न खरीदें जिनमे वॉशरूम और किचन उत्तर पूर्व दिशा में स्थित हो। अगर किसी अपार्टमेंट या इमारत में टैंक सबसे ऊपर होने के बजाय स्लैब पर है ऐसे फ्लैट को नहीं खरीदना चाहिए। अगर किसी फ्लैट में बाथरूम दक्षिण पश्चिम और दक्षिण पूर्व दिशा में है तो ऐसे फ्लैट्स को खरीदने से बचना चाहिए। जिन फ्लैट्स में खिड़कियां पूर्व और उत्तर दिशा में होती है उन्हें बहुत शुभ माना जाता है।

• पानी के स्रोत...

गर्मियों से निजात दिलाने वाला सबसे बड़ा साधन है 'पानी। अगर आपकी कोठी है तो घर में हवादार जगह पर एक पूल या छोटा फाउंटेन जरूर बनाएं। पानी भी घर को ठंडा रखने में मदद करता है। अगर आपका फ्लैट है तो एक बड़े से बाउल में पानी भर कर रखें। यह वास्तु के हिसाब से भी भाग्य को आमंत्रित करता है।